ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 06 कुल पृष्ठ-8 5 से 11 मई, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 वै.शु.-05

गत् 2004 से चल रहे सार्वदेशिक सभा के विवाद पर लगा विराम

सार्वदेशिक सभा के एकीकरण के लिए नियुक्त माननीय कोर्ट कमीश्नर्स जस्टिस विजेन्द्र जैन, जस्टिस आर. एस. सोढ़ी तथा जस्टिस पानाचन्द जैन के प्रयास से

सार्वदेशिक सभा के दोनों पक्षों में बनी सहमति

श्री सुरेशचन्द्र आर्य प्रधान तथा प्रो. विट्ठलराव आर्य नियुक्त हुए मंत्री

इस निर्णय से आर्य जगत में फैली खुशी की लहर

5 सदस्यीय कोर कमेटी सर्वसम्मति से लेगी नीतिगत निर्णय

कोर कमेटी में श्री सुरेशचन्द आर्य व प्रो. विट्ठलराव आर्य के अतिरिक्त, स्वामी आर्यवेश, श्री प्रकाश आर्य एवं श्री विनय आर्य होंगे सदस्य

इस महत्त्वपूर्ण निर्णय के पश्चात् तीनों माननीय कोर्ट कमीश्नर्स के साथ लिया गया चित्र जिसमें बांयें से श्री आर.एस. तोमर एडवोकेट, श्री प्रकाश आर्य, स्वामी आर्यवेश, श्री सुरेशचन्द आर्य, जस्टिस आर. एस. सोढ़ी, जस्टिस विजेन्द्र जैन, जस्टिस पानाचन्द जैन, प्रो. विट्ठलराव आर्य तथा श्री विनय आर्य।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

नारी उत्पीड़न एवं आर्य समाज

– आजाद सिंह बांगड़

विश्वभर में 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है जो मानव जीवन में महिलाओं के अस्तित्व, वर्चस्व और गरिमा को रेखांकित ही नहीं करता बल्कि स्वीकारता भी है लेकिन जिस प्रकार महिला दिवस को मनाया जाता है उसे रस्म अदायगी या औपचारिकता की खानापूर्ति से अधिक कुछ भी नहीं माना जा सकता। महिला दिवस पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाएँ महिलाओं के बारे में बहुत सारी सामग्री प्रस्तुत करती हैं। जिसमें दर्शाया जाता है कि अमुक महिला ने ये पद या स्थान स्थिति प्राप्त की है। पीठ थपथपाने, प्रशंसा करने में इतने लग्नशील हो जाते हैं कि इन करोड़ों महिलाओं के बारे में भूल जाते हैं जो आज भी धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों और आर्थिक मजबूरियों का शिकार होकर अपनी गरिमा को सरेआम लुटता देख कर खून के आंसु पी लेती हैं और किसी को खबर तक नहीं लगती। कुछ शीर्ष महिलाओं को अपवाद मानकर यदि समूचे महिला समाज पर दृष्टिपात करें तो परिणाम नकारात्मक ही सामने आयेगा, इस स्थिति में ये सारे दावे झूठे हो जाते हैं। जिसमें कहा जाता है कि महिलाओं को भी वो ही समानता, न्याय, स्वतन्त्रता प्राप्त है जो पुरुषों को प्राप्त है। इन दावों का विश्लेषण करके यदि महिला दिवस मनाया जाये तो सार्थक रहेगा।

यहां पर हमें समानता, न्याय और स्वतंत्रता के आधार पर ही चर्चा करनी चाहिए। यदि नारी को वास्तव में समानता का दर्जा प्राप्त है तो प्रश्न उठता है कि हर वर्ष लाखों कन्या भ्रूण हत्यायें इस देश में क्यों हो रही हैं? इस्लाम ने एक पुरुष को चार औरतें रखने की छूट क्यों दे रखी है? ईसाईयत आज भी नारी को बिना रूह व आत्मा का प्राणी क्यों मानते हैं?

शरियत में आज भी महिला की आधी गवाही क्यों माना जाता है? मंदिर, मजिस्द, गिरजाघर, मठों में पुजारी, इमाम, पादरी, महंत के पद पर पुरुषों का वर्चस्व सदियों से क्यों चला आ रहा है? बुरके व परदे महिलायें क्यों पहनती हैं? सती प्रथा का अत्याचार पुरुषों पर क्यों नहीं? पुरुष पर पुनर्विवाह का प्रतिबन्ध क्यों नहीं? आधी आबादी का भाग होते हुए भी महिला पंचायत, विधानसभा, संसद में आधा भाग क्यों नहीं? सरकारी सेवाओं में भी आधा भाग क्यों नहीं? नारी को वेदमंत्रों के पठन–पाठन का अधिकार क्यों नहीं? नारी को नरक का द्वारा क्यों माना जाता है? उसे ताड़ना का ही पात्र क्यों माना गया? नारी को मर्द की खेती क्यों कहा गया? देवदासी प्रथा, दहेज प्रथा, कन्या बाल विवाह, बलात्कार, यौन उत्पीड़न, तलाक पुरुष निरंकुशता, सम्पत्ति में भागीदारी न होना ये सब महिलाओं के खाते में क्यों है? जिस समाज में नारी पुरुष पर आश्रित हो और उसकी पहचान पुरुष गोत्र से हो तो उस समाज में समानता का अर्थ कितना रह जाता है?

कानून की दृष्टि में नर–नारी समान हैं लेकिन न्यायाधीश और अदालत को विधि संहिताओं के अन्तर्गत ही फैसला लेना होता है और विधि संहिताओं के निर्माता पुरुष रहे हैं महिलाएं नहीं। इसलिए विधि संहिताएं महिलाओं के बारे में पूरी तरह खुद प्राकृतिक न्याय पर आधारित नहीं है। पाकिस्तान में महिला कैदियों में से 80 प्रतिशत महिलाएं ऐसी हैं जो अपने ऊपर हुए बलातकार को सिद्ध न कर पाने के कारण जेल में बंद है। क्योंकि वहां के कानून में ऐसी ही व्यवस्था है। स्वाधीन भारत में भी महिलाओं को न्याय व सुरक्षा दिलाने के लिए 25–30 बार नये कानून व अधिनियम बनाने पड़े जिससे मालूम होता है कि कानून व्यवस्था में कुछ कमी थी।

अर्थ शास्त्री अमर्त्य सेन की पुस्तक आर्गुमेंटेटिव इंडियन के आधार पर उत्तरजीविता की समानता, घरेलू लाभ या कार्बो में असमान हिस्सा, घरेलू हिंसा या अत्याचार के भेद मानते हुए नारी पर उत्पीड़न हो रहा है। इन्हें आधार मानते हुए आकलन किया जाता है कि कानून को साक्षी आधारित होने की परिस्थिति की बजाय अन्य

सम्भावना पर आधारित बनाना होगा। न्यूनताएं और अक्षमताओं के कारण न्यायी प्रणाली द्वारा पूर्ण न्याय नहीं मिल पाता। जब पुलिस, गवाह, वकील और अदालत तक की आंखे धन से चौंधिया जाती हैं तो कानून को वे अपने सुराख बंद करने होंगे, जिनमें से अपराधी बच कर निकल भागता है। ऐसी स्थिति आने पर महिला को न्याय मिल सकता है।

परम्परावादी या रूढ़िवादी समाजों में आज भी नारी दूसरे दर्जे की हैसियत प्राप्त है। युगल प्रेमियों के मामले में पंचायते खापें जो आज निर्णय ले रही हैं उससे यह बात निकल कर आ रही है कि लड़कियों को आजादी देने से पथ भ्रष्ट होने की सम्भावना बलवती होती है। टी.वी., अश्लील पुस्तकें जो वातावरण तैयार कर रही हैं उससे सामाजिक मर्यादा, पारिवारिक यश और चारित्रिक गरिमा पर आघात करने वाली कोई भी घटना इस परम्परागत समाज में घट जाती है तो एक तूफान खड़ा हो जाता है और औरतों के लिए स्वतंत्रता का दायरा सीमित हो जाता है। विशेषकर यदि ऐसी घटना में दोनों एक ही जाति के ना होकर अलग–अलग जाति या सम्प्रदाय के हो तो तब स्थिति और अधिक बिगड़ जाती है।

गांव में आज भी यही परम्परा है कि गोत्र या गांव की लड़की पूरे गांव की बेटी मानी जाती है। इस तथ्य को शहर या दफ्तर में बैठने वाले अधिकतर लोग नहीं समझ सकते, न पचा सकते हैं। इनकी दृष्टि में बालिग लड़का या लड़की किसी भी जाति, धर्म से सम्बन्धित हो कानून के अनुसार एक दूसरे के साथ विवाह कर सकते हैं। माता–पिता की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है। वे पूरी तरह स्वतन्त्र है, दूसरे पक्ष का कहना है कि यह कानून न तो हमारी सलाह से बनाया गया और ना ही हमारी परम्पराओं व परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाया गया था। इसलिए हम मानने को बाध्य नहीं हैं। ऐसे मामलों में युगल को आजीवन अपने गांव, माता–पिता से अलग रहना पड़ता है। कई बार अपने जीवन से भी हाथ थोना पड़ता है। आर्य समाज अन्तरजातीय विवाह का समर्थन करता है मगर आर्य समाज भी पूर्ण रूप से इसे नहीं अपना पाया। भारतीय समाज विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों, संस्कृतियों का देश है लेकिन साझे प्रयासों और साझी सोच से जब समग्र समाज के कल्याण की बात चलेगी तो देर–सवेर ऐसा समाधान अवश्य निकल जायेगा जो अधिकांश को मान्य होगा। यदि नई सम्भावनाओं और नई परिस्थितियाँ पैदा की जाये तो ऐसे समाधानों का क्रियान्वयन सहज एवं सरल होगा।

आर्य समाज उस समृद्ध संस्कृति का समर्थक है जिसमें भारतीय नारी की समानता, न्याय, स्वतंत्रता के अधिकार प्राप्त थे। जिसे आधुनिक नारी प्राप्त करना चाहती है। यह तभी सम्भव है जब समाज में वेदों की आचार संहिता का भी पालन होगा। जिस वातावरण में ये अधिकार उपयोगी होंगे, वह वातावरण तैयार नहीं हो रहा। नारी की शिक्षा, संस्कार, चरित्र और रोजगार की जब तक समुचित गारण्टी नहीं मिलती तब तक इन अधिकारों की संदिग्धता और दुरुपयोग की सम्भावना बनी रहेगी।

– राष्ट्रीय मंत्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, प्राचार्य दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की मार्मिक अपील

सभी आर्यजन त्यागवृत्ति तथा समर्पण भाव से महर्षि के मिशन को पूर्ण करने का संकल्प लें

युवाओं को संस्कारित करने के लिए जगह-जगह शिविरों का आयोजन करें

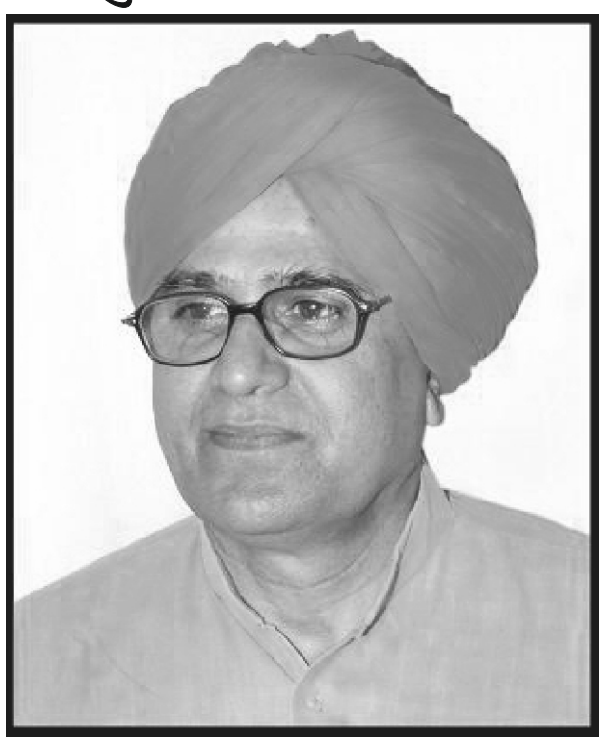

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना के साथ ही हम सबको समाज की बुराईयों से लड़ने की प्रेरणा प्रदान की थी तथा एक उत्कृष्ट समाज की परिकल्पना की थी जिसमें बुराई, कटुता, अज्ञान, लेशमात्र न हो। समाज को सर्वांगीण सुन्दर और सुखमय बनाने का माध्यम आर्य समाज को बनाया गया था। सामाजिक बुराईयों, समस्याओं को दूर करना ही आर्य समाज का उद्देश्य है इसीलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम में स्पष्ट कहा कि ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।'' लेकिन आज जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, महिलाओं पर अत्याचार, धार्मिक पाखण्ड, शोषण जैसी समस्याओं से समाज त्रस्त है अतः बन्धुओं! हमें इन समस्याओं पर गम्भीरता से विचार करना है इन समस्याओं से समाज को कैसे मुक्ति दिलाई जा सकती है इस पर गम्भीरता से चिन्तन करना है और फिर कार्य रूप में परिणित करना है। एक बात तो निश्चित है कि यह कार्य केवल और केवल आर्य समाज ही कर सकता है क्योंकि अन्य कोई भी संस्था इन मुद्दों पर गम्भीर नहीं है।

आज आवश्यकता है उपयोगी आर्य समाजों के निर्माण की अर्थात् आर्य समाज केवल यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग के लिए न हों बल्कि वहाँ योग, संस्कृत शिक्षण, संस्कार तथा योग शिविर, स्वास्थ्य शिविर पुस्तकालय आदि की गतिविधियाँ नियमित रूप से चलें। गोरक्षा, भ्रूण हत्या, नशाखोरी, जातिवाद, भ्रष्टाचार जैसी ज्वलन्त समस्याओं पर चिन्तन बैठकें हों। आर्य समाज की आज देश को पहले से भी अधिक आवश्यकता है और अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अतीत से प्रेरणा लेकर उज्ज्वल वर्तमान और भविष्य का निर्माण करना होगा तभी हम महर्षि के स्वप्न को साकार कर सकेंगे।

आने वाले वर्ष 2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशती आ रही है, दूसरी जन्मशती मनाने की तैयारियों को लेकर अभी से ही आर्य समाज के माध्यम से कर्मठ कार्यकर्ताओं को तैयार करने की जरूरत है, जिसके लिए जगह-जगह शिविर लगाकर आर्य कार्यकर्ता तैयार करने का कार्य तीव्र गति से करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में आर्य समाज की गतिविधियों को भी तेज करने की आवश्यकता है। आजादी की अलख जगाने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती को ध्यान में रखते हुए आर्यजनों को कार्य करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में देश में कुरीतियों का भ्रमजाल बढ़ता ही जा रहा है, इसलिए हम सबकी जिम्मेदारी और अधिक बन जाती है कि अपने देश के युवाओं को अपनी संस्कृति से अवगत कराकर राष्ट्र सेवा के लिए नव-युवकों को तैयार करें जिससे एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण किया जा सकें।

मेरा आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य समाजों के अधिकारियों से विनम्र निवेदन है कि आप सब उन सामाजिक व राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर आन्दोलित हों जिन्हें लेकर एक आम आदमी चिन्तित है, संवेदनशील है, कुछ करने को बेताब है। नारी उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, आर्थिक शोषण, धार्मिक पाखण्ड, अन्धविश्वास, कन्या भ्रूण हत्या, सामाजिक कुरीतियाँ, जातिवाद, साम्प्रदायिकता कुछ ऐसे मुद्दे हैं जो राष्ट्र की उन्नति व समृद्धि को भीतर ही भीतर खोखला कर रहे हैं। सार्वदेशिक सभा इन मुद्दों को लेकर खड़ी हो चुकी है और आप सबका सहयोग इस आन्दोलन में अपेक्षित है। हरियाणा तथा हरिद्वार से मध्य प्रदेश की जन जागरण यात्राओं के अतिरिक्त सारे देश में इस प्रकार के जन जागरण अभियान चलाये जायेंगे। आप सब अपने-अपने क्षेत्र में कार्यक्रम आयोजित करें और हमें आमंत्रित करें हम आपके सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार के कार्यक्रमों से जहाँ आम जनता आर्य समाज के साथ जुड़ेगी वहीं उसका आन्दोलनात्मक स्वरूप प्रखर एवं मुखर होगा।

आर्य समाज का तेजस्वी स्वरूप प्रकट करने के लिए देशभर में आर्य महासम्मेलन आयोजित किये जायें, सामाजिक व राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर प्रखर आन्दोलन हों, जन चेतना यात्रायें निकाली जायें, गोष्ठियों का सिलसिला शुरू हो। टी. वी. पर प्रोग्राम दिये जायें। सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार-प्रसार को विश्वव्यापी बनावें। इन सब कार्यक्रमों से आर्य समाज को शक्ति मिलेगी। हमारे पास कार्यक्रम होगा, हमारे अन्दर इच्छा शक्ति होगी, हम संगठन की शक्ति का महत्त्व समझेंगे, हमअपनी शक्ति और साधनों का सदुपयोग करना जानेंगे तो कोई कारण नहीं है कि हम आर्य समाज को उस उद्देश्य प्राप्ति की ओर न ले जा सकें जिसे लेकर इसकी स्थापना की गई थी। हर आर्य समाज एक नये संकल्प के साथ सक्रिय होकर कार्य करना प्रारम्भ करें। वेद प्रचार, समाज सेवा, शिक्षा, साहित्य प्रकाशन, कुरीति निवारण, सामाजिक जागरण आदि कार्यों में सजग और संगठित होकर कार्य करना होगा। आर्य समाजों और प्रतिनिधि सभाओं में अपने-अपने स्तर पर प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए कि एक समाज कैसे अन्य समाजों से आगे निकल कर नाम कमाये, एक प्रतिनिधि सभा, अन्य प्रतिनिधि सभाओं से कैसे उत्कृष्ट कार्य करके आगे बढ़ें, यह ललक आर्यों में होनी चाहिए। हमें अपने मिशनरी स्वरूप को उजागर करते हुए महर्षि के मिशन के प्रति दीवानगी की हद तक जाना होगा तथा सेवा जन कल्याण तथा परोपकार के कार्य करने होंगे। जन सम्पर्क अभियान तेज करना होगा।

आज सबसे बड़ी आवश्यकता युवा शक्ति को आर्य समाज से जोड़ने की है। जिस संस्था में युवा शक्ति अधिक होगी वह संस्था उतनी ही आगे बढ़ेगी। दुर्भाग्य से आज भारत का युवा वर्ग अज्ञानता में फंस कर धर्म शक्ति, आत्मा एवं बुद्धि बल आदि से क्षीण होता जा रहा है। भोगवादी संस्कृति के कारण देश, धर्म, जाति से युवा वर्ग उदासीन होता जा रहा है इसलिए आज इसकी बहुत आवश्यकता है कि युवा शक्ति को आत्मबल, शक्तिबल तथा धार्मिकता प्रदान कर समाज की बुराईयों से लड़ने हेतु तैयार किया जाये। ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, आर्य वीर दल एवं आर्य युवक समाज आदि आर्य समाज के सभी युवा संगठनों ने विभिन्न स्थानों पर आयोजित शिविरों के माध्यम से लगभग एक लाख युवाओं को संस्कारित करने का कार्य किया है और यह कार्य वर्षों से किया जा रहा है। इन शिविरों में नैतिकता, धार्मिकता, देश भक्ति सत्साहित्य के स्वाध्याय के साथ-साथ नेतृत्व के गुणों का विकास भी किया जाता है। देशभर में समय-समय पर शिविरों तथा जन-चेतना यात्राओं के माध्यम से युवाओं को आर्य समाज के साथ जोड़ने का कार्य युद्ध स्तर पर प्रारम्भ किया जाना चाहिए। देश की प्रत्येक आर्य समाज में युवाओं के शिविर लगने चाहिए। यदि प्रत्येक आर्य समाज प्रतिवर्ष 50 से 100 युवाओं को प्रशिक्षित कर अपने साथ जोड़ने का कार्य करता है तो एक वर्ष में लाखों युवाओं की फौज तैयार की जा सकती है और आर्य समाज को यथेष्ठ गति प्रदान की जा सकती है। यदि आर्य समाजों में आवासीय शिविरों की सुविधा उपलब्ध नहीं हो सकती तो प्रातः सायं शिविर लगा कर युवाओं तथा बच्चों को संस्कारित किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त आर्य समाज के कार्यकर्ता अपने आस पड़ोस में रहने वाले लोगों से सम्पर्क बढ़ायें तथा उनके सुख-दुख में शरीक हों तथा उन्हें परिस्थिति अनुसार सहयोग प्रदान करें तथा उनको अपने कार्यक्रमों में आने के लिए प्रेरित करें। आर्य समाज को सक्रिय करने के लिए विभिन्न स्थानों पर जहाँ आर्य समाज नहीं है या दूर है वहाँ नवीन आर्य समाज की स्थापना कर पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास के विरुद्ध मोर्चा खोलना भी हमारे प्राथमिक कार्य में होना चाहिए। ग्रामीण अंचल और दूर-दराज के क्षेत्रों में वेद प्रचार का सघन कार्यक्रम बनाकर चलने का प्रयास होना चाहिए। इसके अतिरिक्त सुन्दर और सस्ते ट्रैक्ट वितरित कर आम जनता को अपनी मान्यताओं से परिचित करा कर भारी संख्या में लोगों को आर्य समाज से जोड़ने का कार्य करना होगा। आर्य समाजों में महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें आर्य समाज से जोड़ने में विशेष कौशल दिखाना होगा। जहाँ हम अपने परिवार की माताओं, बहनों को आर्य समाज में आने के लिए प्रेरित करें वहीं पास-पड़ोस की महिलाओं को भी आर्य समाज में लाने का प्रयास करें। आर्य समाजों में ऐसे कार्यक्रम होने चाहिएं जिससे महिलायें आकर्षित हों और आर्य समाज की विचारधारा से परिचित हों।

इन सब कार्यक्रमों को अपना कर हम अपना बहुआयामी स्वरूप जनता के सामने ला सकते हैं। इससे न केवल आर्य समाज को पहचान मिलेगी अपितु इससे सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में हम अग्रणी बनकर कार्य कर सकेंगे तथा निश्चित रूप से हम मानवता के हित में, समाज और राष्ट्र के हित में, एक ठोस कदम उठा पायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी भावनाओं को ध्यान में रखकर आप सभी पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से आर्य समाज के कार्य में प्राण-पण से जुटेंगे और आर्य समाज को गति प्रदान करने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आर्य समाज के नेता एवं बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह जी की चौथीं पुण्य तिथि दिनांक 28 अप्रैल, 2022 को उनके पैतृक गाँव–जैनाबाद, रेवाड़ी (हरि.) में मनाई गई

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक महामंत्री व आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष प्रो. श्योताज सिंह जी की चतुर्थ पुण्यतिथि दिनांक 28 अप्रैल, 2022 (गुरुवार) को उनके पैतृक गांव–जैनाबाद, रेवाड़ी (हरियाणा) में शांति यज्ञ एवं प्रेरणा सभा का आयोजन करके मनाई गई। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक सभा के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, गुरुकुल धीरणवास के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कोषाध्यक्ष श्री विष्णुपाल, यादव सभा जिला महेन्द्र गढ़ के प्रधान श्री प्रेमराज यादव, आर्यनेता श्री रामनिवास आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अन्तरंग सदस्य श्री ब्रह्मदेव, गांव के पूर्व सरपंच एवं प्रो. श्योताज सिंह जी के बचपन के साथी महन्त लालदास जी महाराज, सामाजिक कार्यकर्ता श्री हवा सिंह हुड्डा, श्री जगदीश आर्य एवं श्री राज सिंह आर्य ग्राम लोहाना, श्री राजेन्द्र सिंह यादव पार्षद् नगर निगम गुरुग्राम, श्री ऋषिपाल बढाना, श्री जगदीश आर्य फरीदाबाद, श्री हंसराज भारतीय दमदमा, श्री अश्विनी पंडित बहलपा, जिला वेद प्रचार मण्डल के प्रधान ब्र. यशदेव जी आदि अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने प्रो.श्योताज सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी गरीब व मजदूरों के हक अधिकारों के लिए लगाई। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय महासचिव रहते हुए संगठन में लगभग एक लाख पचहत्तर हजार मजदूरों को पुनर्वासित करवाने के कार्य में भी बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। कई बार उनके ऊपर जानलेवा हमले भी हुए। लेकिन वे कभी अपने लक्ष्य से विमुख नहीं हुए। आर्य समाज में युवाओं के निर्माण के लिए सैंकड़ों बड़े कार्यक्रमों का आयोजन भी इनकी देखरेख में हुआ। 1987 में दिल्ली से देवराला की सतीप्रथा विरोधी जन चेतना यात्रा की व्यवस्था भी आपने श्री सत्यव्रत समवेदी व श्री रामसिंह आर्य तथा श्री बिरजानंद एडवोकेट के साथ मिलकर संभाली। 2005 में स्वामी दयानन्द जी के जन्म स्थान टंकारा से जलियांवाला बाग अमृतसर तक की बेटी बचाओ यात्रा का नेतृत्व भी आपने किया। अपने जीवन के प्रारंभिक दौर में ही कोलेज के प्रोफेसर की नौकरी छोड़कर स्वामी अग्निवेश जी के साथ कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था।

हैदराबाद से पहुंचे सार्वदेशिक सभा के मंत्री तथा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो.विट्ठलराव आर्य जी ने कहा कि उनका जीवन आध्यत्मिक मूल्यों से ओतप्रोत रहा। समता वाला जीवन जीना। हमेशा दिखावे से दूर रहकर साधारण खान पान व साधारण वेशभूषा ने उनके जीवन को प्रेरणादायक बना दिया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट ने कहा कि उनका जीवन संघर्षो से भरा हुआ रहा। नगर परिषद गुरुग्राम के पूर्व अध्यक्ष श्री राजेन्द्र यादव ने कहा कि उनसे बहुत बातों पर मार्गदर्शन मिलता था।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने कहा कि उनका जीवन जब चमका जब वे समाज के कार्यों को अपने कंधे पर लेकर चले।

ब्र. यशदेव ने वेद प्रचार मंडल रेवाड़ी की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनका जीवन सरल व सौम्य था। वे सादे वेश में संन्यासी थे।

महात्मा लालदास ने कहा कि मैंने उनके साथ राजनीति व सामाजिक जीवन जिया। मैनें ही उनको स्वामी अग्निवेश जी से मिलवाया था। यादव सभा के प्रधान श्री प्रेमराज यादव ने कहा कि प्रो.

साहब ने हमारे इलाके का नाम दुनिया में रोशन किया। उन्होंने कहा कि ई–लाइब्रेरी बनाई जा रही है। आर्य समाज का कार्य ही मुख्य रूप से हो रहा। भवन पर ईश्वर स्तुति उपासना के मंत्र अंकित करवाये हैं।

युवा नेता हवा सिंह हुड्डा ने कहा कि त्याग का जीवन समाज में लगाना सबके सामर्थ्य में नही होता। लेकिन प्रोफेसर साहब एक महान व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने देश में बड़ा कार्य किया। परिवारजन उनकी याद में इस तरह के कार्यक्रम निरन्तर करते रहें।

बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि एक पिता की तरह उनका सान्निध्य मिला। विदेश की धरती पर पहली बार उनके साथ जाने का अवसर मिला। उनका जीवन हमारे लिए हमेशा प्रेरणा का कार्य करता रहेगा। श्री राजसिंह आर्य लुहाना ने कहा कि प्रोफेसर साहब ने शराबबंदी आंदोलन में अहम भूमिका निभाई।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अंतरंग सदस्य ब्रह्मदेव आर्य ने कहा कि धन्य है वो माँ जिसने प्रोफेसर साहब को जन्म दिया। प्रोफेसर साहब ने देश दुनिया में वेद प्रचार का कार्य किया। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने कहा कि प्रो साहब ने आम आदमी वाला रास्ता नहीं अपनाया बल्कि कठोर रास्ता अपनाया। उन्होंने ऋषि दयानंद से प्रेरित होकर अपना जीवन समाज सेवा में लगाया। उनका गंभीर व्यक्तित्व उनको आम आदमी से अलग खड़ा कर देता था। उनके जीवन के हर पहलू से संगठन के मजबूत करने की प्रेरणा मिलती है। जब तक हम संगठन में रहते हैं हमारी ताकत बढ़ती है।

इस अवसर पर दिल्ली से विष्णुपाल, फरीदाबाद से जगदीश आर्य, मुकेन्द्र, ऋषिपाल, रोहतक से अजयपाल, जगदीश लुहाना ने भी प्रो. श्योताज सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम शांति यज्ञ से प्रारम्भ हुआ था, जिसकी व्यवस्था श्री यशदेव आर्य व श्री जगदीश आर्य ने संभाली तथा ब्रह्मा स्वामी आर्यवेश जी रहे। कार्यक्रम का संचालन स्वामी आदित्यवेश जी ने किया।

इस अवसर पर पांच लोगों को 'प्रो. श्योताज सिंह स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया जिन्हें सम्मान प्रदान किया गया उनके नाम निम्न हैं – आशु कुमारी, हर्षित कुमार, लाल सिंह, संदीप कुमार को शिक्षा व खेल के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि के लिए सम्मानित किया गया वहीं शहीद अजय कुमार की याद में 'राष्ट्र गौरव सम्मान' से उनके परिवार जनों को सम्मानित करते हुए स्मृति चिन्ह व शॉल भेंट किये गये।

आर्य समाज शक्तिनगर के पूर्व प्रधान श्री नरेन्द्र गुप्ता की प्रथम पुण्यतिथि पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी श्रद्धांजलि देने पहुँचे

यज्ञ का पौरोहित्य आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने किया

आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली के पूर्व प्रधान स्व. श्री नरेन्द्र गुप्ता की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर 29 अप्रैल, 2022 को उनके निवास 28/7 शक्तिनगर में यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, मोतीलाल नेहरू कॉलेज के प्राचार्य डॉ. श्रीवत्स शास्त्री, डॉ. देव शर्मा आदि ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। चतुर्वेद शतकम् यज्ञ का ब्रह्मत्व आर्य पुरोहित सभा के प्रधान और सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने किया। विदित हो कि श्री नरेन्द्र गुप्ता का निधन गत वर्ष कोरोना के दौरान हो गया था और कोरोना के कठोर नियमों के कारण कोई श्रद्धांजलि सभा नहीं हो पाई थी। अतः इस श्रद्धांजलि सभा में उनके परिवार के सभी सदस्य, सम्बन्धिगण तथा शुभचिन्तक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री नरेन्द्र गुप्ता एक मजबूत आत्मशक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व थे। वे कभी भी मौत से डरे नहीं, यद्यपि उन्हें पिछले 30 वर्ष से कैंसर जैसी घातक बीमारी से जूझना पड़ रहा था, किन्तु उसके बावजूद भी वे अपने आत्मबल के आधार पर मौत से टकराते रहे। किन्तु कोरोना के दौरान उनके फेफड़े इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्हें मौत के सामने हारना पड़ा और 29 अप्रैल, 2021 को वे स्वर्ग सिधार गये। मृत्यु के समय जो लोग उनके साथ विद्यमान थे उनके अनुसार श्री नरेन्द्र गुप्ता जी दोनों हाथ ऊपर उठाकर सबको अन्तिम नमस्ते कहते हुए विदा हुए और अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। नरेन्द्र गुप्ता में निर्णय लेने की क्षमता थी वे जो निर्णय ले लेते थे उस पर सदैव कायम रहते थे। अपने चार भाईयों और दो बहनों में वे सबसे पहले दुनिया से विदा हुए हैं। उनके जाने से परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है। आर्य समाज को समर्पित श्री नरेन्द्र गुप्ता अपनी फैक्ट्री में कार्य प्रारम्भ करने से पहले प्रतिदिन यज्ञ करते थे और यज्ञ के प्रति उनकी अद्भुत आस्था थी। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि इस परिवार से मेरा बहुत लम्बा सम्बन्ध है। स्व. श्री ओम प्रकाश गुप्ता (भाई जी) एवं स्वर्गीया माता लीलावती गुप्ता जी का मुझे भरपूर सहयोग एवं स्नेह मिला। माता जी मुझे अपना पांचवां पुत्र मानती थीं और आप सभी को यह जानकर

आश्चर्य होगा कि उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र डॉ. भूपेन्द्र गुप्ता से लिखित में यह घोषण करवा दी थी कि मेरी अन्त्येष्टि स्वामी आर्यवेश जी (श्री जगवीर जी) के हाथों से होनी चाहिए और यह मेरा सौभाग्य रहा कि पूज्य माता जी की अन्त्येष्टि की पूरी प्रक्रिया मैंने स्वयं परिवार के अन्य सदस्यों के साथ पूरी की। आदरणीय डॉ. भूपेन्द्र जी अमेरिका में थे उन्होंने भी मुझे टेलीफोन पर कहा कि आप ही मेरी ओर से चन्दन की लकड़ियाँ पूज्या माता जी के पार्थिव शरीर पर रखें, ताकि मुझे यह संतोष रहे कि मैंने आपके माध्यम से माता जी की अन्त्येष्टि में भाग ले लिया है। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी परिवारजनों को प्रेम के साथ मिलकर रहने की प्रेरणा दी और कहा कि आर्य समाज शक्ति नगर स्व. श्री ओम प्रकाश गुप्ता (भाई जी) तथा पूज्य माता जी के स्मारक के रूप में है। इस आर्य समाज के श्री नरेन्द्र गुप्ता जी लगभग 20 वर्ष तक प्रधान रहे। अतः हम सबकी यह जिम्मेदारी बनती है कि समाज के कार्यों को अच्छी प्रकार से करें और अधिक से अधिक से लोगों को आर्य समाज से जोड़ें।

स्वामी आदित्यवेश जी ने श्री नरेन्द्र गुप्ता जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनके आत्मबल से हमें भी प्रेरणा लेनी चाहिए कि बड़े से बड़े संकट में भी हम कभी निराश न हों। डॉ. श्रीवत्स शास्त्री ने भी उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी। आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने पारिवारिकजनों को आर्य समाज के कार्यों में बढ़–चढ़कर तथा उत्साह के साथ सहयोग करने की प्रेरणा दी। श्रद्धांजलि सभा में श्री नरेन्द्र गुप्ता की बड़ी बहन डॉ. स्नेह लता, बहन प्रमिला आर्या, बड़े भाई श्री वीरेन्द्र गुप्ता आदि के अतिरिक्त उनके दोनों सुपुत्र अरुण गुप्ता तथा दीवेक्ष गुप्ता, उनकी बेटी रचना, उनकी भतीजी शालिनी गुप्ता तथा उनके दामाद श्री सुरेन्द्र गुप्ता, उनके भतीजे प्रिय आदित्य व पुत्रवधु निधि गुप्ता आदि ने यजमान के रूप में आहुतियाँ प्रदान की। स्व. नरेन्द्र जी की धर्मपत्नी श्रीमती अंजना गुप्ता ने सभी विद्वानों का सम्मान किया और स्वामी आर्यवेश जी से आग्रह किया कि वे आर्य समाज शक्तिनगर और हमारे घर को अपना घर समझकर निरन्तर यहां आते रहें और बच्चों को आशीर्वाद देते रहें। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज की व्यवस्था की गई थी।

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर

बंधुआ मुक्ति मोर्चा का साधारण सभा (राष्ट्रीय चौपाल) का अधिवेशन

दिनांक 30 अप्रैल एवं 1 मई, 2022 को अलवर (राज.) में हुआ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा प्रो. विट्ठलराव आर्य राष्ट्रीय महामंत्री हुए निर्वाचित

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी, संघर्ष एवं त्याग की प्रतिमूर्ति पूज्य स्वामी अग्निवेश जी महाराज द्वारा स्थापित बंधुआ मुक्ति मोर्चा का राष्ट्रीय अधिवेशन 30 अप्रैल, 1 मई, 2022 को स्वरूप विलास पैलेस होटल, अलवर (राजस्थान) में आयोजित किया गया। अधिवेशन में उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों से साधारण सभा के सदस्य एवं प्रमुख कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। 30 अप्रैल, 2022 को प्रातः 11 बजे से सायं 7 बजे तक दो सत्रों में चले अधिवेशन में दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि देते हुए शोक प्रस्ताव पारित करने के उपरान्त गत् कार्यवाही की सम्पुष्टि की गई। गत् वर्ष के आय–व्यय विवरण को पास किया गया तथा अगले वर्ष के अनुमानित बजट को स्वीकृत किया गया, उसके पश्चात् मोर्चा के पदाधिकारियों का चुनाव हुआ। सर्वप्रथम प्रो. विट्ठलराव आर्य को चुनाव अधिकारी चुना गया और उन्हें निर्वाचन का अधिकार सर्वसम्मति से दिया गया। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने चुनाव प्रक्रिया को प्रारम्भ करने से पूर्व सभी नियमों से सदस्यों को अवगत कराया और बताया कि यदि चुनाव सर्वसम्मति से होता है तो उसे घोषित कर दिया जायेगा और यदि सर्वसम्मति से चुनाव नहीं हो पायेगा तो विधिवत मतदान के द्वारा चुनाव कराया जायेगा। सर्वप्रथम अध्यक्ष पद के लिए चुनाव अधिकारी प्रो. विट्ठलराव आर्य ने नाम प्रस्तुत करने के लिए कहा। श्री बिरजानन्द जी ने अध्यक्ष पद के लिए स्वामी आर्यवेश जी का नाम प्रस्तुत किया और कहा कि स्वामी आर्यवेश जी वर्तमान समय में स्वामी अग्निवेश जी के सबसे अधिक समर्पित साथियों में से एक हैं और उन्हें बंधुआ मुक्ति मोर्चा में काम करते हुए लम्बा समय बीत चुका है, उन्हें सभी प्रकार के अनुभव प्राप्त हैं। अतः अध्यक्ष पद के लिए उनका नाम ही सर्वाधिक उचित है। श्री मकेन्द्र कुमार–फरीदाबाद, श्री सुभाष निंबालकर–महाराष्ट्र, श्री हवा सिंह हुड्डा–हरियाणा, श्री अमीर्नुरहमान–उत्तराखण्ड, श्रीमती शशि अहीरवार–गुना (मध्य प्रदेश) आदि ने स्वामी आर्यवेश जी के नाम का अनुमोदन किया। चुनाव अधिकारी प्रो. विट्ठलराव द्वारा साधारण सभा में उपस्थित सदस्यों से अन्य कोई नाम प्रस्तावित करने के लिए कहा किन्तु दूसरा नाम प्रस्तुत न होने पर सर्वसम्मति से स्वामी आर्यवेश जी को अगले 5 वर्ष के लिए बंधुआ मुक्ति मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित कर दिया गया। सभी उपस्थित सदस्यों ने तालियाँ बजाकर अपना समर्थन व्यक्त करते हुए स्वामी जी का स्वागत किया। एक अन्य प्रस्ताव के द्वारा मोर्चा के अन्य पदाधिकारियों के चुनाव का अधिकार सर्वसम्मति से नव–निर्वाचित प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को दे दिया गया और उनके प्रार्थना की गई कि वे सभी सदस्यों की कार्यक्षमता, योग्यता आदि से भली–भांति परिचित हैं। वे कार्यकारिणी का गठन अपनी सूझ–बूझ से कर लें। सभी सदस्यों को उनके ऊपर पूर्ण विश्वास है और वे जो कार्यकारिणी गठित करेंगे उसे साधारण सभा का

सर्वसम्मति से समर्पण होगा। निर्वाचन के उपरान्त पहला सत्र समाप्त हुआ और भोजन के उपरान्त दूसरा सत्र प्रारम्भ होने के साथ ही स्वामी आर्यवेश जी ने नई कार्यकारिणी की घोषणा कर दी। जिसे साधारण सभा ने सर्वसम्मति से तालियों की गढ़गढ़ाहट के साथ पास किया। नव–निर्वाचित कार्यकारिणी में अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी, उपाध्यक्ष श्री राजेश याज्ञिक एवं श्री बिरजानन्द एडवोकेट, महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, उपमंत्री स्वामी आदित्यवेश, कोषाध्यक्ष श्री विष्णुपाल, संगठन मंत्री श्री मनु सिंह के अतिरिक्त सदस्य श्री हवा सिंह हुड्डा, स्वामी विजयवेश, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या, श्री राम निवास, श्री धर्मेन्द्र कुमार, श्री काशीराम, श्री भंवर लाल आर्य–जोधपुर, श्री मकेन्द्र कुमार।

कार्यकारिणी की घोषणा के उपरान्त अपने–अपने क्षेत्र की समस्याओं पर अपने विचार प्रस्तुत किये और बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्य को और अधिक सक्रिय के संकल्प लिये। इस सत्र में जिन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किये उनमें प्रमुख श्री अमीर्नुरहामन–अल्मोड़ा, श्री सुभाष निंबालकर–लातूर, महाराष्ट्र, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश–परभणी, महाराष्ट्र, श्री भंवरलाल आर्य–जोधपुर, श्री भूप सिंह यादव–शिकोहाबाद (उ. प्र.), श्री हवा सिंह हुड्डा–सोनीपत, श्रीमती शशि अहीरवार–गुना, श्री गफ्फार खॉन–शिवपुरी, श्रीमती रेनू गुप्ता–अलवर, श्री राम निवास–नारनौल, श्री रामचरण–पाली, श्री काशीराम–मोहन डेरा, श्री राजेश याज्ञिक, स्वामी आदित्यवेश जी, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या आदि ने अपने विचार रखे।

1 मई अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के उपलक्ष्य में आई.एन.ए. आडिटोरियम, सिविल अस्पताल, अलवर, राजस्थान में विशाल मजदूर सभा का आयोजन किया गया। इस सभा की अध्यक्ष बंधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने की और कार्यक्रम के मुख्यअतिथि के रूप में जिला परिषद् अलवर के अध्यक्ष जिला प्रमुख श्री बलवीर सिंह छिल्लर रहे। मंच का संचालन बंधुआ मुक्ति मोर्चा जिला अलवर के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र चौधरी एडवोकेट ने किया।

इस अवसर पर सर्वश्री बिरजानन्द जी, राजेश याज्ञिक, प्रो. विट्ठलराव आर्य, बहन प्रवेश आर्या, प्रो. रमेश पैरवा, स्वामी आदित्यवेश, मौलाना हनीफ खॉन, सद्भाव मंच के अध्यक्ष सरदार परमदीप सिंह, श्रीमती दया गर्ग, श्री राकेश तिवारी आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये। आर्य युवक परिषद् के व्यायाम शिक्षक श्री मनोज आर्य ने क्रांति गीत प्रस्तुत किया। स्वामी भीष्म द्वारा रचित गीत ''ये किसने लूट मचाई मजदूर तेरी छान में''। ''कमाने वाला खायेगा, लूटने वाला जायेगा, नया जमाना आयेगा।'' आदि नारों के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरि.) के मजबूत स्तम्भ
श्री राजवीर वशिष्ठ के निवास पर टिटौली में नवजात शिशु और उनके सुपौत्र रुद्रदेव के आशीर्वाद यज्ञ में
सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, बहन प्रवेश आर्या तथा बहन पूनम आर्या आशीर्वाद देने पहुँचे

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम के परम सहयोगी एवं मजबूत स्तम्भ श्री राजवीर वशिष्ठ के नवजात सुपौत्र रुद्रदेव के आशीर्वाद यज्ञ का विशेष आयोजन 3 मई, 2022 को प्रातः उनके निवास स्थान ग्राम टिटौली में किया गया। यज्ञ में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, बहन प्रवेश आर्या तथा बहन पूनम आर्या जी, श्री ऋषिराज शास्त्री जी आदि सम्मिलित हुए। यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व पं. नरेश आर्य ने संभाला। यज्ञ के उपरान्त आशीर्वाद देने वालों में मुख्य रूप से श्री राम कुमार आर्य, तहसीलदार ऋषि प्रकाश, श्री सतीश, रामचन्द्र, श्री भीम, श्री रामफल, श्री नरेश पंडित, श्री ताराचंद, श्री रामफूल, श्री राजेन्द्र, श्री रतनसिंह, श्री मुक्तिवेश व डॉ. लक्ष्मणदास, श्री पंचदेव, श्री निरदेव, श्री राजेश आदि उपस्थित हुए।

यज्ञ के उपरान्त सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने संक्षिप्त प्रवचन में बच्चे के निर्माण की विधि की विवेचना की और उन्होंने कहा कि बच्चे की माता श्रीमती रीना तथा पिता श्री धर्मदेव की यह जिम्मेदारी है कि वे बच्चे को अभी से अच्छे संस्कार देना शुरू करें। बच्चे को कभी भी गलत संस्कार न देवें, अपशब्दों का प्रयोग, झूठ–फरेब, भूत–प्रेत या काल्पनिक बातों से सदैव बचायें। बच्चे को सदैव ऐसी बातों से प्रेरित करें कि वह सदैव आगे बढ़े, परोपकारी बनने की प्रेरणा प्रदान करें। स्वामी जी ने गृहस्थ आश्रम के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला और सभी उपस्थित स्त्री–पुरुषों को प्रेरणा दी कि यदि वे सुख चाहते हैं तो वे अपने घरों में यज्ञ किया करें। क्योंकि कहा गया है – स्वर्ग कामो यजेत। स्वर्ग की इच्छा है तो यज्ञ करो। जो लोग अपने परिवारों में यज्ञ करते हैं और यज्ञ के अनुरूप अपना आचरण बनाते हैं वे सदैव सुखी रहते हैं और उन्हें पृथ्वी पर ही स्वर्ग प्राप्त हो जाता है। स्वर्ग सुख विशेष को कहते हैं। अतः सुख विशेष प्राप्त करने के लिए यज्ञ की एक मात्र साधन है, माध्यम है।

अन्त में श्री राजवीर वशिष्ठ ने सभी विद्वानों का सम्मान किया और आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

यस्यच्छायाऽमृतम्

विद्यावाचस्पतिः श्री रामदत्त शास्त्री, पक्की सराय, अनूपशहर, बुलन्दशहरम् (उ. प्र.)

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रात्तजनमानस शंकरोऽविरतविततितापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मद्देशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सून्नतविचारवर्धकं तादृशं मङ्लमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्च्याविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृंङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्रजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथा विधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था वितो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्था।ः इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्घ, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथ मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्ति भूम्नि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमैश्वरः।

यजुंषि प्रतिपादितम्

HOW TO ESTABLISH AS A GRAHSTHI

There are four ashramas as Brahmcharya, Grahstha, Vanprastha & sanyas in the vedic system of living. Our Vedic philosophers being practical men have already thought over the partitions of our life's time. The above mentioned gradation deals with inner joy.

Life is a journey we already know. How to maintain this journey joyous and happy? This is the question which is to be answered in the light of our Ashram living.

First of all you have to become a man and man means to catch up thinking process to act what the righteousness is , to behave what the betterment is to others is so on and so forth to test your credibility in the society. Certainly, you are a human being which differs from other living ones.

You take birth in a family and you are brought up by your parents adopting certain skills to mould favourable to you at all times when your childhood begins. Their love sympathy, affection wrapped up with aesthetic sense give you turnings to prepare you physically, mentally spiritually and socially. All the impressions you catch in a normal way. You become a part and parcel of your family . In other words you are a member of society. At the age of 25 years you become a good thinker, a good contemplater. You discern the good from the evil. If you do good, you will be esteemed. you understand the etiquette, you understand your responsibilities for your parents, for the neighbours and for the nation. You may become patriot filled with utmost feelings to your country. What a philanthrophic idea you stage up. Really over the age of 21, you are physically and mentally ripened. Under 21 your decisions may mislead you. The changes of your body and brain will tell you all. So at the age of 25 you are perfectly capable for the age to get married and produce children. Female body demands the limit of 16 to 18 years of age on medical ground.

Secondly, it is proper on your part when you are employed or do some business of your own and your Conscience declares you to be a source of independently earnings to maintain your Grahstha Ashram with skillful handlings. Then you are respectable in the society and dexterious to conduct your own family. It means you have learnt lore (vidya) of how to earn and how to spend. You might have undergone the Brahmacharya Ashram first and prepared youself well because of your tactics of knowledge and experience. Only you have to learn how to overcome the sexual urge and let it flow in constructive channels of life . This can be the mental level at the age of maturity that is 25 years.

BY B.R.SHARMA VIBHAKAR

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः ओ३म् संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून (सोमवार) से 12 जून (रविवार), 2022 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गांव टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

पांच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाइल अपने साथ न लेकर आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक छात्राएँ 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएँ। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट 'युवा निर्माण अभियान' अथवा 'महिला समता मंच' के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइण्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, महिला समता मंच एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)
सम्पर्क नं.:– 9416630916, 9354840454, 01262–286900

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग की महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

आर्य समाज की एकता के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को निर्णय लेने के लिए दिया अधिकार

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज की एकता के लिए यदि आवश्यकता पड़ी तो प्रधान पद छोड़ने से भी पीछे नहीं हटेंगे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अन्तरंग की महत्त्वपूर्ण बैठक 2 मई, 2022 को सभा मुख्यालय ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–110002 में हुई। बैठक की कार्यवाही का संचालन सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने किया। सर्वप्रथम दिवंगतजनों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गत कार्यवाही की सम्पुष्टि का विषय प्रस्तुत किया, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। सभा मंत्री ने सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित विवाद की समीक्षा करते हुए बताया कि कल होने वाली जजों की बैठक में सम्भावना है कि सभा के एकीकरण की दिशा में कुछ प्रगति होगी। इस सम्बन्ध में सभा प्रधान जी को हम सभी को अधिकृत कर देना चाहिए कि वे सार्वदेशिक सभा तथा आर्य समाज के हित में जो भी निर्णय लेना चाहें ले सकते हैं। इस प्रस्ताव के उपरान्त बैठक में सर्वसम्मति से सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को अधिकृत किया गया कि वे आर्य समाज की एकता और आर्य समाज के व्यापक हित में जो भी निर्णय लेंगे, वही सभा को स्वीकार्य होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित सभासदों का धन्यवाद करते हुए कहा कि 3 मई, 2022 को सार्वदेशिक सभा के एकीकरण के लिए दिल्ली हाईकोर्ट द्वारा नियुक्त तीन जजों के कमीशन की बैठक होने जा रही है जिसमें हमारा पूरा प्रयास रहेगा कि आर्य समाज के सभी पक्ष इक्ट्ठे होकर सार्वदेशिक सभा के संगठन को और सभी प्रान्तों के संगठन को एकसूत्र में बांधने का प्रयास करें। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान समय में आर्य समाज की एकता की विशेष आवश्यकता है। धर्म के नाम पर बढ़ रहे पाखण्ड तथा अन्धविश्वास, जातिवाद तथा साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, अश्लीलता, महिला उत्पीड़न, भ्रष्टाचार तथा शोषण जैसी ज्वलन्त समस्याएँ समाज को खोखला कर रही हैं। ऐसी स्थिति में सभी की दृष्टि आर्य समाज की ओर लगी हुई है। क्योंकि आर्य समाज के सिवाय इन सामाजिक समस्याओं, कुरीतियों तथा रुढ़ियों के विरुद्ध और कोई संगठन कार्य करने में सक्षम नहीं है। किन्तु आर्य समाज में चल रहे बिखराव के कारण संगठित प्रयास नहीं हो पा रहे हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने स्पष्ट किया कि जब उन्होंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद को स्वीकार किया था तो उन्होंने अपने पहले वक्तव्य में यह संकल्प व्यक्त किया था कि आर्य समाज की एकता उनकी प्राथमिकता होगी और इसके लिए यदि उन्हें अपने पद का त्याग भी करना पड़े तो भी वे पीछे नहीं हटेंगे। अपने इस संकल्प को पूरा करने के लिए आज भी तत्पर हैं।

सभा के अन्तरंग सदस्यों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए स्वामी जी से कहा कि जो भी समझौता हो वह सम्मानजनक होना चाहिए ताकि आर्य समाज के कार्य में समर्पित कार्यकर्ताओं, विद्वानों, संन्यासियों तथा उपदेशकों का पूरा सम्मान हो और वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में उनका पूरा सदुपयोग हो सके। बैठक में बताया गया कि 2024 से 2028 तक कई महत्त्वपूर्ण अवसर हमारे समक्ष आने वाले हैं, जब पूरे आर्य जगत को मिलकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना है।

स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि सन् 2024–25 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती, आर्य समाज स्थापना की 150वीं जयन्ती, 2026 में स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान शताब्दी, 2027 में अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान शताब्दी और 2028 में शेरे पंजाब लाला लाजपत राय बलिदान शताब्दी आ रही है। इन सभी वर्षों को केन्द्रित करके हमें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों की योजना बनानी है। कुछ रचनात्मक कार्यों की रूपरेखा तैयार करनी है। विविध समितियों का गठन करके अनेक महत्त्वाकांक्षी योजनाओं को मूर्तरूप देने के लिए कार्य करना है। इसके लिए सम्पूर्ण आर्य जगत का सहयोग अपेक्षित है।

स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक सभा की उपलब्धियों के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए बताया कि सभा भवन के रख–रखाव, वेद भाष्य का प्रकाशन, नये साहित्य का प्रकाशन, आर्य समाज मिण्टो रोड की सुरक्षा, देश–विदेश में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन, आर्य समाज के इतिहास में पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के प्रांगण में आयोजित करके सार्वदेशिक सभा ने अनेक कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इसी प्रकार सार्वदेशिक सभा का शताब्दी समारोह, कुम्भ मेला हरिद्वार में विशाल वेद प्रचार शिविरों का आयोजन, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, गोहत्या तथा अश्लीलता आदि के विरुद्ध यात्राओं का आयोजन, युवा निर्माण शिविरों के द्वारा लाखों युवाओं को आर्य समाज में दीक्षित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में गत वर्षों में होता रहा है और भविष्य में भी और अधिक ऊर्जा के साथ इन कार्यों को किया जायेगा। अन्तरंग सभा में कई प्रान्तों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और सभी ने बड़े उत्साह के साथ कार्य करने का संकल्प लिया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।